213hi04

4

आधुनिक विश्व – II

पिछले पाठ में, आपने पुनर्जागरण के दौरान विकास के बारे में पढ़ा। जिससे यूरोपीय समाज में कई परिवर्तन हुए। विज्ञान के क्षेत्र में असाधारण उपलब्धियां हासिल की गईं। लोगों ने अंधविश्वास और परंपराओं को समाप्त कर दिया और अवलोकन और प्रयोगों पर अधिक जोर दिया। मुद्रण प्रेस के आने से बंधुत्व, समानता स्वतंत्रता इत्यादि जैसे मूल्य और विचारों में राजनीतिक जागरूकता आई। राजनीतिक स्थिति ने यूरोप में विश्व के बहुत से देशों के लिए नए समुद्रीमार्ग खोजने के जोखिम उठाने की स्थिति पैदा की। मिशनरियों ने ईसाई धर्म के नए क्षेत्रों में फैलाने का साहासिक कार्य किया और व्यापारी वस्तुओं को लेने के लिए विश्व के विभिन्न हिस्सों में पहुंचे। इंगलैण्ड में प्रौद्योगिकीय परिवर्तनों के लिए यह सही समय था जिनसे औद्योगिक क्रांति हुई तथा विशेषरूप से कामगार वर्ग के जीवन में क्रांतिकारी परिवर्तन हुए। अब हमें एशिया और अफ्रीका में औद्योगिक क्रांति, उपनिवेशवाद और साम्राज्यवाद के प्रभावों के बारे में पढ़ना है। साथ ही इस अध्याय में दो विश्व युद्धों और संयुक्त राष्ट्र संघ के गठन के विषय में पढ़ना है। दोनों विश्व युद्धों और संयुक्त राष्ट्र संघ के गठन के बारे में इस अध्याय में पढ़ेंगे।

उद्देश्य

इस पाठ को पढ़ने के बाद आप सक्षम हों जायेगे :

- औद्योगिक क्रांति का वर्णन;
- औद्योगिक क्रांति के द्वारा आये प्रौद्योगिकीय और नवीन परिवर्तनों पर चर्चा;
- औद्योगिक क्रांति के समाज पर प्रभाव का आकलन;
- उपनिवेशवाद और साम्राज्यवाद के उदय के उत्तरदायी कारकों की पहचान;
- एशिया और अफ्रीका में साम्राज्यवाद के विकास के विभिन्न चरणों पर चर्चा;
- उन घटनाओं की चिन्हित करें जिनसे दो विश्वयुद्ध हुए;
- संयुक्त राष्ट्र संगठन के उद्देश्यों की सूची।

4.1 औद्योगिक क्रांति

18वीं सदी में औद्योगिक क्रांति हुई। इससे सामाजिक और आर्थिक परिवर्तन हुए। यह बदलाव एक स्थायी कृषि और व्यापारिक समाज के आधुनिक औद्योगिक समाज बनने को चिंहित करता है। ऐतिहासिक तौर पर 1750 से 1850 की अवधि ब्रिटेन के इतिहास के संदर्भ में है। सामाजिक और आर्थिक संचे में आये नाटकीय परिवर्तनों से इनका स्थन आविष्कार के रूप में जगह अविष्कारों और नई तकनीकी द्वारा मशीनों के तैयार बड़े-पैमाने के उत्पादन की फैक्टरी व्यवस्था और वृहत आर्थिक विशिष्टता ने ले लिया। जो जनसंख्या पहले कृषि में कार्यरत थी अब शहरी कारखानों की ओर बढ़ने लगी। क्या आप जानते हैं कि ऐसा क्यों हुआ? पहले के व्यापारी परिवारों को कच्चा माल देते और उनसे तैयार उत्पादन एकत्र करते थे। इस व्यवस्था से बाजार की बढ़ती मांगों को लम्बे समय तक पूरा नहीं किया जा सकता था। इसलिए 8वीं सदी के अंत तक, अमीर व्यापारियों के द्वारा कारखानों की स्थापना की गई। उन्होंने नई मशीनें लगाई, कच्चा माल से और निश्चित वेतन पर काम करने वाले श्रमिकों मशीनों में बनी वस्तुएं बनवाई। इस प्रकार कारखाना प्रणाली का जन्म हुआ।

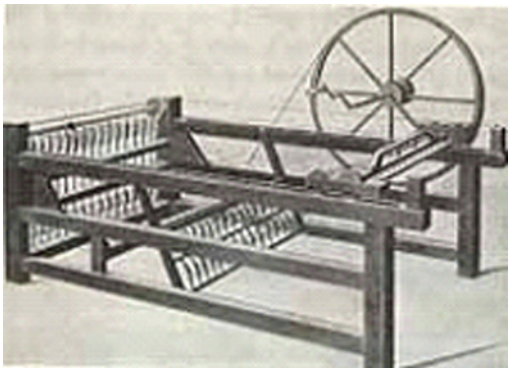

चित्र 4.1 शुरूआती स्पिनिंग मशीन

औद्योगिक क्रांति की शुरुआत ब्रिटेन में भाप की शक्ति के उपयोग से शुरू हुई। वह 1769 में जेम्स वाट के भाप इंजन के आविष्कार के बाद संभव हुआ। 1733 में जॉन केयस ने उड़ती तूरी का अविष्कार किया जिससे कपड़े बुनने की प्रक्रिया को आसान कर दिया और उत्पादन चार गुणा बढ़ा दिया। जेम्स हरग्रीवस ने एक हाथ संचालित चरखा, स्पिनिंग जेनी का आविष्कार किया, इस स्पिनिंग जेनी (कताई चरखे) से एक बार में ही कई गुणा धागे बने लगे। कताई चरखा स्पिनिंग जेनी के आविष्कार के बाद, सती वस्त्र इस अवधि का प्रमुख उद्योग बन गया है। कोयले और लोहे की बड़ी मात्रा में उपस्थित ब्रिटेन के तेजी से औद्योगिक विकास में एक निर्णायक कारक साबित हुआ। नहरों और सड़कों के निर्माण, इसी तरह से रेल और जहाज के आगमन थे, निर्मित वस्तुओं के लिए बाजारों को फैलाया। पेट्रोल इंजन और बिजली के साथ विकास का नया काल आया। इनके पास वे सभी संसाधन थे जो उसे एक औद्योगिक शक्ति बना सकतेथे। औद्योगिक क्रांति का असर दुनिया भर में महसूस किया गया। 1850 से, क्रांति ब्रिटिश जिंदगी में एक प्रमुख कारक बनने उद्योगों के साथ पूरा किया गया था। 1830 के बाद में फ्रांस के बाद 1850 जर्मनी

और गृह युद्ध के अमेरिकी में बाद औद्योगीकरण शुरू हो गया। हम आगे पढ़ेगे कि कैसे औद्योगीकरण हासिल हुआ।

प्रमुख आविष्कार और सुधारों ने इंग्लैंड में कृषि को बढ़ावा दिया। महत्वपूर्ण परिवर्तनों नवाचारों जेथ्रो टुल बीज रोपण ड्रिल से बीजों के समान अंतराल और गहराई पर बिना बर्बाद किये बीज बोने में कृषि में अपनी जगह बना ली है। 1760 से 1830 के बीच, ब्रिटिश संसद ने लगभग 1000 संलग्नक अधिनियमों के द्वारा भूमि को जो पहले उस जिस समुदाय की थी उनको बड़े क्षेत्रों से जोड़ दिया गया। हालांकि इन सब से लिए कृषि उत्पादन बढ़ाने में मदद मिली। लेकिन उसी समय इसने भूमिहीन लोगों की एक बड़ी संख्या प्रदान की। अब केवल कुछ ही लोगों की खेतों पर काम करने की जरूरत थी। इसलिए की एक बड़ी संख्या ने लोगों रोजगार के लिए शहरों की ओर पलायन शुरू कर दिया। इसने कारखानों में काम करने के लिए सस्ते और अधिक मजदूर प्रदान किये।

इंग्लैंड में अनुकूल राजनतिक परिस्थितियों ने भी औद्योगिक क्रांति के विकास में मदद की। व्यापारिक प्रतिबंध हटाने जैसे औक्ट/अधिनियमों और सामूहिक बाजार व्यापारियों के लिए अनुदान था। इंग्लैंड मुख्य रूप से अपने परिवहन में विकास के कारण विदेशी बाजारों पर कब्जा करने में सक्षम था। कई यूरोपीय देशों ने अब वाणिज्यवाद की नीति का पालन शुरू कर दिया था। इस नीति के तहत उद्योगों और व्यापार में सरकारी नियंत्रण प्रयोग किया गया था। यह सिद्धांत है इस पर आधरित है कि राष्ट्रीय शक्ति अधिक निर्यात और कम आयात की ओर संकेत देता है। यह सिद्धांत इस पर भी विश्वास रखता है कि एक राष्ट्र की सम्पत्ति का स्वामित्व उसके सोने और चांदी पर निर्भर करता है तथा सरकार का व्यापार में हस्तक्षेप सीमित होना चाहिए।

वे क्या कारक थे जिन्होंने इंग्लैंड को औद्योगिक क्रांति वाला पहला देश बनाना संभव किया? इंग्लैंड के अन्य देशों से अधिक भौगोलिक लाभ का भरपूर उपयोग किया। सुरक्षति स्थान के साथ-साथ यह द्वीप समुद्रतट के नजदीक है। परन्तु इसने यूरोप के अन्य देशों से अलग होकर निर्बाध प्रगति की है। जलमार्गों जैसे नहरों, नदियों और समुद्र ने इंग्लैंड को बिना कर और रुकावट के विशाल मुक्त व्यापार क्षेत्र प्रदान किया। इन सभी लाभों ने इंग्लैंड में औद्योगिक क्रांति के लिए उचित स्थिति तैयार की।

4.2 औद्योगिक क्रांति के दौरान हुए नवीन और प्रौद्योगिकी परिवर्तन

कई नवीन आविष्कार और प्रौद्योगिकीय परिवर्तनों के इस अवधि के दौरान जगह ले ली। इसने औद्योगिक देशों को और अधिक शक्तिशाली और कुशल बनाने में मदद की। अब उत्पादन बड़ी मात्रा में, सस्ता और बहुत तेजी से किया जा सकता था। इन आविष्कारों का कपड़ा और परिवहन उद्योगों पर बहुत प्रभाव पड़ा जिनके विषय में आप पढ़ने जा रहे है।

4.2.1 वस्त्र उद्योग

कपड़ा उद्योग में तकनीकी प्रगति ने लोहा और इस्पात उत्पादन में आविष्कारों की एक श्रृंखला शुरू कर दी। अन्य देशों ने इंग्लैंड के उस उदाहरण से प्रेरणा ली जिसमें इंग्लैंड से निर्मित वस्तुओं

की दुनिया के बाजार में बाढ़ आ गई। ब्रिटेन ने अपने हितों की रक्षा के लिए एक कानून पारित किया जिसमें कपड़ा मजदूरों को दूसरे देशों की यात्रा करने और औद्योगिक तकनीकी की जानकारी बाहर न खोलने पर प्रतिबंध लगा दिया। परन्तु 1789 में, सैमुएल स्लेटर इंग्लैंड से बाहर निकल कर अमेरिका पहुंचा। वह अपने साथ ब्रिटिश कपड़ा उद्योग का ज्ञान ले गया जिससे अमेरिका में औद्योगिक क्रांति प्रारंभ हुई। अमेरिका में कपास वृक्षारोपण के लिए विशाल क्षेत्रों को दासों की बढ़ती भाग के तहत लाया गया। फ्रांस और जर्मनी में औद्योगिक क्रांति समान घटनाओं से शुरू हुई।

क्या आप जानते हैं कि आर्क राइट कारखाने प्रणाली का पिता कहा जाता था? उसने पहला कारखाना मुख्य रूप से घरेलू मशीनों से तैयार किया, जहां काम के घंटे तय थे और लोगों का वास्तव में अनुबंध के आधार पर रखा गया था। 1779 में, शमूएल क्रॉम्पटन ने स्पिनिंग म्यूल का आविष्कार किया जबकि एडमंड कार्टराईट ने पहले पानी संचालित करघे का आविष्कार किया।

क्रियाकलाप 4.1

अपने पड़ोस के किसी हथ-करघा केंद्र में जाए अथवा बुनकर परिवार से मिलें। वे किस प्रकार का कार्य करते हैं इस बारे में पता लगाओ। क्या वहां पर पुरुषों और महिलाओं में श्रम संबंधी भेद है। वे किस प्रकार की प्रौद्योगिकी का प्रयोग करते हैं। उन्हें किन-किन समस्याओं का सामना करना पड़ता है? क्या वे बच्चों को काम पर रखते है अथवा उनके बच्चे उनके काम में सहायता करते हैं? अपने निष्कर्षों पर रिपोर्ट लिखो।

नवोन्मेत्र और प्रौद्योगिकीय परिवर्तनों से निर्माण, परिइवहन और संचार उद्योगों तथा इनसे निकट संबंध रखने वाले रसायन, इलेक्ट्रिकल, पेट्रोलियम और स्टील उद्योगों में प्रगति की है। व्यापार मार्गों की खोज से न सिर्फ औद्योगिक क्रांति को बल मिला बल्कि इनसे कच्चे माल नए बाजारों और सस्ते कारीगरों हेतु उद्योगों की आवश्यकताओं को पूरा करने के लिए अपने साम्राज्यों का विस्तार करने हेतु उपनिवेशों और साम्राज्यवादी ताकतों में प्रतिस्पर्धा हुई।

साम्राज्यवादी विस्तारों से सर्वोच्चता हेतु संघर्ष और द्वितीय विश्व युद्ध हुआ। उपनिवेशों का शोषण किया गया। उनके परम्परागत सामाजिक आर्थिक और राजनीतिक प्रणालियों को समाप्त कर दिया गया। उन्होंने अपने खुद के राष्ट्रों की स्थापना करने और विदेशी शासन का विरोध करना प्रारंभ कर दिया।

4.2.2. भाप का इंजन

औद्योगिक क्रांति की एक और बड़ी उपलब्धि भाप की शक्ति विकास और प्रयोग था। पहले के उपकरणों का सुधार किया गया और मशीनों के विकसित रूप में उद्योगों की संख्या को बढ़ गया था। इसलिए उत्पादन के लिए अत्यधिक शक्ति की जरूरत थी। 1705 में, थॉमस न्यूकॉमन कोयला खानों से पानी निकालने के लिए एक इंजन का निर्माण किया। 1761 में, जेम्स वाट डिजाइन ने न्यूकॉमन के इंजन के डिजाइन और दक्षता में चौगुना सुधार किया। उसने भाप और कारण

निर्वात गाढ़ा करने के लिए ठंडे पानी की एक जेट के साथ एक कक्ष की शुरूआत की। यह भी एक दूसरे से प्रोद्योगिकी के हस्तांतरण की अवधि थी। वाट ने जॉन विल्किनसन के ड्रिल के बंदूक का इस्तेमाल करने के लिए अपने इंजन के लिए बड़े सिलेंडर बोर किया। भाप इंजन में जल्द ही पहले लोकोमोटिव कोयला इंजन की जगह ले ली। इससे रेलवे लाइनों की मांग में वृद्धि हुई। प्रौद्योगिकी ने भाप इंजन को हल्का किया। जिससे अन्य उद्योगों इसकी मांग बढ़ी। अब नदियों या किसी भी झीलों के साथ कारखानों का लगाने की जरूरत नहीं थी।

4.2.3 कोयला और लौह

भाप इंजन ने कोयला और लोहे के साथ आधुनिक उद्योगों की नींव रखी। उनका यह मानना था कि जिन लोगों की मौत की इच्छा हो वही खान में काम कर सकते थे। कोयला क्षैतिज सुरंगों के साथ टोकरी में ले जाया गया था और फिर सीधा घसीट कर सतह तक लाया जाता था। खानों से कोयले का ढकेलना जानवर, आदमी, औरत और बच्चों ताकत पर पूरी तरह से निर्भर था। कोयला खानों में काम करने की स्थिति खतरनाक थी। दुर्भाग्य इस काम के लिए बच्चों को उनके छोटे आकार की वजह से पसंद किया जाता था।

भाप शक्ति के उपयोग में वृद्धि के कारण कोयले की मांग बढ़ने लगी। कोयला खानों में कई सुधार किए गए जैसे सुरंगों को हवादार बनाया गया, विस्फोट के लिए बारूद का इस्तेमाल किया गया। लेकिन कोयला खनिक कई तरह के खतरों और स्वास्थ्य समस्याओं और फेफड़ों की बीमारी से पीड़ित थे।

लोहे उद्योग में इस समय के दौरान महत्वपूर्ण सुधार किए गए। 1709 में, इब्राहीम डर्बी कोक के साथ ढलवां लोहे का उत्पादन किया। इससे पहले ढलवा लोहा लकड़ी के कोयला से प्राप्त किया जाता था जिससे कि तेजी से इंग्लैंड के जंगलों में लकड़ी की कमी हुई। 1784 में, हेनरी कर्ट जो एक आयरन मास्टर थे उन्होंने एक कम भंगुर लोहे के उत्पादन के लिए एक प्रक्रिया विकसित की है। यह लोहे लवनहीज बुलाया गया था। यह औद्योगिक प्रक्रियाओं में एक बहुत ही उपयोगी धातु साबित हुई। 1774 में, जॉन विल्किनसन ने एक डिलिंग मशीन का आविष्कार किया है जिससे सटीकता के साथ छेद किया जा सकता था। 1788 और 1806 के बीच, लोहे का उत्पादन में कई गुना वृद्धि हुई है और लोहे का उपयोग कृषि मशीनरी, हार्डवेयर, जाहज निर्माण, आदि में फैल गया।

लोहा और कपड़ा उद्योग के विकास में यह आवश्यक था कि सस्ती वस्तुऐं और उनकी तेजी से ढुलाई के लिए बेहतर परिवहन सुविधाओं का आविष्कार किया जाये। घरेलू और विदेशी बाजारों की जरूरतों को पूरा करने के लिए ऐसा जल्द से जल्द करना आवश्यक था।

4.2.4. परिवहन और संचार के साधन

परिवहन और संचार के साधनों में सुधारने औद्योगिक क्रांति का बहुत प्रोत्साहित किया। कच्चे माल तैयार उत्पादों को, भोजन और लोगों को परिवहन की एक विश्वसनीय प्रणाली की जरूरत थी। 1700 में पुल और सड़क निर्माण में सुधार शुरू में किए गए थे। वे उनके गंतव्यों परिवहनों से कच्चे और कारखानों में तैयार माल को अपने गंतव्य तक पहुंचाने में मदद करते थे। 1814 में, जॉर्ज स्टीवेंसन पहले भाप लोकोमोटिव इंजन का निर्माण किया जो रेलवे ट्रैक पर चला। भाप

इंजन और रेलवे पटरियों से जल्दी इंग्लैंड में माल लाने ले जाने के लिए नहर परिवहन को समर्थन मिला। क्या आप जानते हैं कि डार्लिंगटन से स्टॉकटन के लिए पहली रेलवे लोकोमोटिव कर्षण का उपयोग करने के लिए और यात्रियों के रूप में माल ले जाने के रूप में अच्छी तरह से लाइन वर्ष 1825 में था?

मध्य 19वीं शताब्दी के दौरान लकड़ी चालित जहाज की जगह भाप चालित ने जहाज ले लिया। इसके तुरंत बाद लोहा जहाज समुद्र के पार यात्रा के लिए इस्तेमाल किया गया था। यद्यपि औद्योगिक क्रांति के पहले चरण में भाप पर निर्भर करता है, तो दूसरे चरण में बिजली पर निर्भर था। क्या आप जानते हैं माइकल फैराडे ने पहली इलेक्ट्रिक मोटर की खोज करने का गौरव प्राप्त था? बिजली अब व्यावसायिक रूप से उपलब्ध हो गयी और कारखानों को चलाने के लिए इस्तेमाल किया जाने लगा था। परिवहन, व्यापारिक लेनदेन और संचार के तेजी से मतलब है, सैनिक इकाइयों, कालोनियों, देशों, और यहां तक कि आम लोगों के बीच तेजी संपर्क बढ़ना। टेलीग्राफ और टेलीफोन के आविष्कार ने दुनिया में कहीं भी तुरंत संवाद संभव बनाया है।

चित्र 4.2 : जार्ज स्टीफेंसन का स्टीम इंजन

4.3. औद्योगिक क्रांति के प्रभाव

औद्योगिक क्रांति ने शहरी जनता के आंदोलन को प्रोत्साहित किया। जिसने एक शहरी समाज को जन्म दिया। श्रमिकों अब कार्यशालाओं या कारखानों के करीब रहते थे। जहां वे रोजगार के अवसर प्रदान मिलते थे। लेकिन कारखानों में काम करने की स्थिति दयनीय आवास, स्वच्छता और स्वास्थ्य की स्थिति के साथ दुखी थे। कारखाने के मालिकों सिर्फ एक ही मकसद था लाभ कमाने बनाने के लिए बनाया गया था। इसलिए वह श्रमिकों को लंबे समय तक के लिए कम मजदूरी पर काम करने के लिए मजबूर करते कभी-कभी 12 से 14 घंटे। महिला और बच्चे को बहुत कम मजदूरी का भुगतान किया जाता था। कारखानों में खराब हवादार, शोर, गंदा, नम और अंधेरे थे। क्या आपको लगता है कि लंबे समय के लिए इस स्थिति को जारी रखा जा

सकता था? धीरे-धीरे श्रमिकों ने अपनी ताकत का एहसास शुरू किया। ट्रेड यूनियनों ने दबाव बनाया। एक आंदोलन कारखाने प्रणाली के अन्याय से श्रमिकों को बचाने के लिए शुरू किया। कई कानून काम करने और रहने की स्थिति को सुधारने के लिए किए तैयार गए थे। इसके बारे में और अधिक आप अगले भाग में पढ़ोंगे।

क्रियाकलाप 4.2

अपने चारों ओर अपने परिवार में अथवा पड़ोस अथवा दुकान अथवा बाजार में देखो। क्या आपने 14 वर्ष से कम आयु के बच्चों को काम पर रखते हुए और उन्हें शिक्षा के अधिकार से वंचित देखा है? उन्हें शिक्षा देने के लिए क्या किया जाना चाहिए। इसको एक विचार दो और उनकी सहायता करने के तरीके ढूंढने की कोशिश करो।

उत्पादन में अत्यधिक वृद्धि हुई जिसके परिणाम स्वरूप वस्तुओं की कीमत में कमी आई। मानव श्रम का स्थान मशीनों ने ले लिया और उत्पादन की स्वदेशी प्रणाली समाप्त हो गई। कृषि उत्पादन में वृद्धि और खाद्य कीमतों में कमी आई। फैक्ट्रियों और मशीनों के स्वामित्व से धन के नए स्रोतों का उद्‌गम हुआ। लोगों के इस नए समूह को पूंजीवादियों के रूप में जाना गया। इन्होंने अधिक आए वाले क्षेत्रों से आवश्यकता वाले क्षेत्रों में पूंजी के वितरण हेतु बैंकिंग प्रणाली प्रारंभ की 1700 के प्रारंभ में सुनार, व्यापारी और विनिर्माताओं द्वारा पहला निजी बैंक खोला गया।

शीघ्र ही औद्योगिक क्रांति अन्य देशों में भी फैल गई। व्यापार मार्गों की खोज ने कच्चे माल, नए बाजारों और सस्ते कारीगरों की आवश्यकता को पूरा करने के लिए अपने साम्राज्यों का विस्तार करने हेतु निवेश और साम्राज्यवादी ताकतों में प्रतिस्पर्धा को बढ़ावा मिला। इससने यूरोप के देशों प्रतिद्वंद्विता विशेष रूप से इंग्लैंड और फ्रांस के बीच अनिवेशों की दौड़ प्रारंभ कर दी।

बाद में इस दौड़ में इटली, जर्मनी और अन्य देश भी शामिल हो गए। इन साम्राज्यवादी विस्तारों से सर्वोच्चता के लिए संघर्ष और दो विश्व युद्ध हुए जिनके बारे में आप इस पाठ में आगे पढ़ेंगे। इन्होंने उपनिवेशों का शोषण किया और इनकी परंपरागत, सामाजिक, आर्थिक और राजनीतिक प्रणालियां समाप्त कर दी। इन उपनिवेशों ने विदेशी शासनों का विरोध करना और अपने स्वतंत्रता हेतु लड़ाई प्रारंभ कर दी।

पाठगत प्रश्न 4.1

1. शोषण और गंदी बस्तियां उद्योगों का परिणाम थी। इस समस्या को हल करने के लिए दो समाधानों का सुझाव दीजिए।
2. क्या आप सहमत हैं कि औद्योगीकरण ने लोगों के उच्च जीवन स्तर को जन्म दिया है? अपने जवाब के समर्थन में दो कारण दीजिए।
3. परिवार प्रणाली में हुए दो परिवर्तनों की सूची लिखो जब लोगों को शहरों में ले जाया गया।
4. ब्रिटिश उद्योगों ने महिलाओं और बच्चों के रोजगार के लिए क्यों प्रोत्साहित किया?

4.4 साम्राज्यवाद और उपनिवेशाद का उत्थान

आपने पिछले भाग में औद्योगिक क्रांति के बारे में पढ़ा कि यह कैसे पश्चिमी देशों में फैली थी। 19वीं सदी की समाप्ति तक अधिकांश देशों में यूरोपीय देशों में औद्योगिक क्रांति हो गयी। इन देशों में कच्चे माल और तैयार माल को बेचने के लिए एक बाजार की निरंतर आपूर्ति की जरूरत थी। इसलिए उन्होंने उन क्षेत्रों पर अपने नियंत्रण का विस्तार करना शुरू कर दिया जहां अभी औद्योगिकरण नहीं शुरू हुआ। पूंजिपतियों को अब अपनी अधिशेष पूंजी निवेश के लिए नये स्थानों और नए उद्योगों की आवश्यकता थी क्योंकि उनके अपने देश व उनके पड़ोसी इलाकों से उनकी जरूरतें पूरी नहीं हो सकती थी। या किसी दूसरे देश की राजनीतिक और आर्थिक जीवन पर नियंत्रण और शासन की विस्तार देने की इस प्रक्रिया को साम्राज्यवाद के रूप में जाना जाता है। यह सैन्य या अन्य साधनों के माध्यम से किया जा सकता है। उपनिवेशवाद का अर्थ है कालोनियों पर कब्जा और उन्हें अपने विजय अधीन करना चाहे युद्ध द्वारा या अन्य किसी साधन से। कच्चे माल, बाजार और पूंजी के निवेश के लिए जो साम्राज्यवादी देशों के अपने देश से बाहर भूमि को जीत के लिए प्रेरित करने के लिए नए स्थानों की जरूरत थी। साम्राज्यवाद की मुख्य विशेषता सैन्य विजय, राजनीतिक शासन के माध्यम से एक साम्राज्यवादी राष्ट्र द्वारा या किसी अन्य विधि द्वारा कालोनियों के आर्थिक प्रभुत्व पर अधिकार कर ले। उपनिवेश से धन और संसाधन का साम्राज्यवादी देशों के लिए निष्काक्षन हुआ। कालोनियों के हित साम्राज्यवादी देश के हितों के अधीन थे। वह देश जो दूसरी भूमि के लिए युद्ध लड़ता वह देश साम्राज्यवादी देश कहलाता और जिस देश के लिए संघर्ष होता वह उपनिवेक्ष कहलाता था। 19वीं सदी के अंत तक एशिया और अफ्रीका के लगभग सभी देशों के एक या अन्य यूरोपीय देशों के नियंत्रण में थे।

आप क्यों सोचते हैं कि इन औद्योगिक देशों ने एशिया और अफ्रीका को अपने प्रभुत्व का विस्तार करने के लिए चुना था? यह था क्योंकि ये देश संसाधनों से समृद्ध थे लेकिन राजनीतिक और सैन्य रूप से कमजोर और औद्योगिक दृष्टि से पिछड़े थे। दुर्भाग्य से, वे बहुत दूर और दूरी पर थे। बिना अच्छे संचार साधन के, कोई भी देश उन से लाभ लेने में असक्षम होगा। साम्राज्यवाद का विकास परिवहन और संचार के विकास के साथ संभव था। अच्छी सड़कें, जहाजरानी, रेलवे और नहरे अपने देशों में और उपनिवेशों में औद्योगिक देशों द्वारा बनाया गया था। उपनिवेशों से वस्तुओं को लाना ले जाना इन देशों के लिए आसान बना दिया था। सैनिकों को भी आसानी से उपनिवेशों के लिए भेजा जा सकता था। टेलीग्राफ और टेलीफोन के विकास के साथ, संदेश आसानी से भेजे जा सकते थे। अब लगभग हर देश साम्राज्यवादी देशों की पहुंच के भीतर आ गये थे।

चरम राष्ट्रवाद साम्राज्यवाद के विस्तार में एक प्रमुख शक्ति बन गया था। प्रतिष्ठा, गौरव और महिमा के लिए, इटली और जर्मनी जैसे कुछ देशों ने दूसरों की भूमि पर विजय प्राप्त की। इस समय तक, यूरोपीय में नस्लीय श्रेष्ठता की भावना विकसित की थी। एशिया और अफ्रीका के लोगों को पिछड़े के रूप में माना जाता था। उनके मुताबिक, यह सफेद आदमी पर है कि वह पिछड़े लोगों को सभ्य बनाये। इन देशों की जीत इनमें ईसाई धर्म फैलाना और इनमें आत्मज्ञान लाना अपना कर्तव्य समझते थे। इस भावना ने इन भूमि की विजय के लिए एक नैतिक औचित्व प्रदान किया

यह मुश्किल नहीं था कि साहसी और खोजकर्ता के रूप में विजय भूमि के लिए गोरों के बीच एक इच्छा को उकसाने में एक महत्वपूर्ण भूमिका निभाई। दूरदराज क्षेत्रों में खोजी भूमि के धन और संसाधनों के विषय में मूल्यवान जानकारी का वे वापस आकर वर्णन करते थे। क्या आप क्रिस्टोफर कोलम्बस, वास्को दा गामा और फर्डिनांड मैगलन जैसे कई खोजकर्ता के पढ़े हुए नाम याद है?

4.4.1 अफ्रीका में साम्राज्यवाद

क्या आप जानते है कि एक समय था जब अफ्रीका को एक अंधकार महाद्वीप के रूप में जाना जाता था? बहुत कम जानकारी इस महाद्वीप के बारे में उपलब्ध थी। मिशनरियों और खोजकर्ता अंदरूनी भाग में जाने वाले पहले व्यक्ति थे। यहां इन्होंने हाथीदांत, सोना, हीरा, लकड़ी और उन लोगों की जिन्हें गुलाम बनाया जा सकता था। अफ्रीका की भी कमजोर राजनीतिक प्रणाली, एक पिछड़ी अर्थव्यवस्था और समाज के साथ-साथ कमजारे सेनाएं थीं। यूरोपीय देशों के बीच एक प्रतियोगिता शुरू हो गई शक्ति और प्रतिष्ठा को बढ़ाने के साथ ही कच्चे माल और उनके विनिर्मित वस्तुओं के लिए बाजार प्राप्त करने की। दूसरी और यूरोपीयों के पास तकनीकी रूप से उन्नत हथियार थे जिससे उन्हें अपने विजय अभियानों में मदद मिली। 1875 तक, अफ्रीका में यूरोपीय अधिपत्य तटों के पास व्यापारिक और वाणिज्यिक केंद्रों और कुछ छोटी बस्तियों तक सीमित था। लेकिन 1880 और 1910 के बीच, पूरे अफ्रीका का गोरों के बीच में विभाजित किया गया था। अफ्रीका और उसके लोगों से संबंधित सभी महत्वपूर्ण निर्णय लंदन, पेरिस, लिस्बन और अन्य यूरोपीय राजधानियों के सम्मेलनों की मेज पर अगले 50 वर्षों तक लिया गया।

? क्या आप जानते हैं

फ्रांस ने अफ्रीका के अधिकतम उपनिवेशों संख्या पर शासन किया, जबकि ब्रिटेन ने लोगों की बड़ी संख्या पर शासन?

फ्रांस ने उत्तर और पश्चिम अफ्रीका में एक विशाल साम्राज्य का अधिग्रहण किया। अल्जीरिया, ट्यूनीशिया, मोरक्को, आइवरी कोस्ट, डहोमी पश्चिम अफ्रीका में माली और अन्य क्षेत्रों के फ्रांसीसी शासन के अधीन आये। ब्रिटेन ने गाम्बिया, सिएरा लियोन, गोल्ड कोस्ट, नाइजीरिया, दक्षिण अफ्रीका, रोडेशिया युगांडा, केन्या, मिस्र, सूडान, इरिट्रिया, सोमालीलैंड का कुछ हिस्सों और लीबिया पर शासन किया। जर्मनी के दक्षिण पश्चिम तनजानिया टोगोलैण्ड और कैमरून पर शासन किया। जब तक विश्व युद्ध में जर्मन न हारा। प्रथम विश्व युद्ध 1914 के शुरू में केवल दो स्वतंत्र देशों अफ्रीका लाइबेरिया और इथियोपिया ही शेष बचे थे। लेकिन इथियोपिया इटली द्वारा 1935 में लिया गया था।

साम्राज्यवाद के बारे में एक दिलचस्प विशेषता अफ्रीका में गुलाम व्यापार था। यूरोपीय लोगों ने अफ्रीका से दास को आयात करके अमेरिका के अपने उपनिवेशों में बागानों पर काम करवाना

शुरू कर दिया। पुर्तगाल की राजधानी लिस्बन में एक नियमित रूप से गुलाम बाजार था। 1500 और 1800 के बीच लगभग 15 लाख अफ्रीकी कब्जे में लिये गये और दास के रूप में बेचे गये।

क्रियाकलाप 4.3

एक व्यक्ति के साथ उसके/उसकी रंग, वंश, वर्ग, जाति अथवा क्षेत्र के आधर पर भेद भाव और तिरस्कार किया जाता था। हमारे साथ इस तरह की भारत और विदेश दोनों में मौखिक और शारीरिक दुर्व्यवहार की घटनाएं होती रहती थी। क्या आप समझते हैं जब हम ऐसे कार्यों में भाग लेते है तब हम संवेदनशीलता और परिपक्वता से कार्य कर रहे होते हैं? अन्य लोग कैसा महसूस करेंगे? बताएं इसे रोकने के लिए आप क्या कदम उठा सकते है।

4.4.2. एशिया में सम्राज्यवाद

अफ्रीका की तरह ही एशिया में भी यूरोपीय लोगों ने उपनिवेश बनाने शुरू कर दिये थे। ब्रिटिश और फ्रांस जैसे समृद्ध देशों ने पुर्तगाल और हॉलैंड की तरह नहीं व्यापार नहीं किया। जिन्हें अंततः भारत से बाहर फेंक दिया गया। जल्द ही अंग्रेजी और फ्रेंच कंपनियों ने यहां बस्तियां बनायी। 1763 में, ब्रिटिश ने भारत से फ्रेंच प्रभाव कम किया और यहां अपने नियंत्रण की स्थापना की। अगले पाठ में भारत में ब्रिटिश शासन के बारे में और अधिक पढ़ सकते हो। जापान और चीन जैसे देशों ने अपने पारंपरिक तरीके में उनके विश्वास की वजह से पश्चिमी संस्कृति और जीवन के तरीके को स्वीकार करने से इनकार कर दिया। बक्सर विद्रोह और अफीम युद्ध ने औद्योगिक देशों को चीन में शामिल करने के शक्ति दे दी। धीरे-धीरे उन्होंने औद्योगीकरण और पश्चिमी प्रभाव को स्वीकार किया। हम ने पढ़ा कि यह कैसे हुआ।

4.4.3 चीन

चीनी माल की यूरोपीय देशों में अधिक मांग थी, लेकिन चीन में यूरोपीय सामान के लिए कोई मांग न थी। यह एक तरफा व्यापार यूरोपीय व्यापारियों के लिए लाभदायक नहीं था इसलिए उन्होंने चीन को अफीम की तस्करी शुरू करके चीनी युवाओं और चीनी माल के विनिमय को नष्ट कर दिया। इससे चीन और ब्रिटेन के बीच प्रथम अफीम युद्ध में चीन आसानी से हार गया था और ब्रिटिश खुद के लिए कई रियायतें प्राप्त करने में सफल हुआ। वह चीन के सभी पांच बंदरगाहों को ब्रिटिश व्यापारियों के लिए खुलवाने में सफल रहे। चीनी सरकार विदेशी माल पर किसी भी तरह का टेरिफ लागू नहीं कर सकती थी। वे चीनी अदालतों में ब्रिटिश विषयों के खिलाफ किसी भी तरह का परीक्षण नहीं ले सकते थे। हांगकांग का द्वीप ब्रिटेन को सौंप दिया गया।

दूसरा अफीम युद्ध के ब्रिटिश ध्वज के अपमान के खिलाफ बदला और एक फ्रांसीसी मिशनरी की हत्या के लिए लड़ा गया था। चीन दो यूरोपीय शक्तियों से हार गया था और अंतिरिक्त क्षेत्रीय अधिकार देने के लिए मजबूत किया गया था।

बक्सर विद्रोह ईसाई मिशनरियों और प्रभाव के क्षेत्रों में चीन के विभाजन के बाद चीन के शोषण के खिलाफ एक संगठित आतंक था। चीनी युवाओं को अपनी मुट्ठी के साथ विदेशी नागरिकों अत्याचार भी सहन करने पड़ रहे थे। उन्हें शाही अदालत के गुप्त समर्थन प्राप्त था।

4.4.4 जापान

1868 में शुरू हुए मीजी पुनसंस्थापन 'प्रबुद्ध नियम' ने जापान को एक बंद सामंती समाज से बदल कर पहले औद्योगिक राष्ट्र के जापान के रूप में बदला। उसके खुद के प्राकृतिक संसाधन थोड़े थे। इसलिए उसे दोनों विदेशी बाजारों और कच्चे माल के स्रोतों की जरूरत थी।

1871 में, जापानी नेताओं के एक समूह ने यूरोप और अमेरिका का दौरा किया। जापानी राज्य बनने के बाद उसने औद्योगीकरण की नीति बनाई। 1877 में, जापान में बैंक स्थापित किया गया था। कई इस्पात और कपड़ा कारखानों की स्थापना की गई, शिक्षा को लोकप्रिय किया गया और जापानी छात्रों का अध्ययन करने के लिए पश्चिम में भेजा गया था। वर्ष 1905 से, 'देश को समृद्ध, सैन्य मजबूत बनाने के नारे के तहत जपान एक अविजित औद्योगिक और सैन्य राष्ट्र के रूप में उभरा। वह दक्षिण के सखालिन, कोरिया, मंचूरिया, भारत-चीन, म्यांमार, मलाया, सिंगापुर, इंडोनेशिया और फिलीपींस को जीतने में सफल रहा था।

4.4.5 दक्षिण और दक्षिण - पूर्व एशिया में साम्राज्यवाद

दक्षिण और दक्षिण पूर्व एशिया में नेपाल, बर्मा, श्रीलंका, मलाया, इंडोनिशया, भारत और चीन, थाईलैंड, भारत और फिलीपींस शामिल हैं। नए साम्राज्यवाद से उदय से पहले भी, इन देशों में से कई पर पहले से ही गोरों का प्रभुत्व रहा। श्रीलंका पर पुर्तगालियों ने कब्जा कर लिया था तो डच और ब्रिटिश के द्वारा उत्तर्रादूर्ध पर। इंग्लैंड में चाय और रबड़, बागान, का परिचय हुआ जो श्रीलंका में नियांत के 7/8 रूप में शुरू किया गया।

दक्षिण पूर्व एशिया के अन्य देशों को भी साम्राज्यवाद का सामना करना पड़ा। फ्रांसीसी सैनिकों का वियतनाम पर हमले का दावा था कि वे भारत-चीन के ईसाइयों की रक्षा कर रहे थे। धीरे-धीरे वियतनाम, लाओस, कंबोडिया को फ्रेंच औपनिवेशिक साम्राज्य के साथ जोड़ा गया था। ब्रिटिश ने म्यांमार और सिंगापुर मलाया राज्यों पर नियंत्रण पाने के लिए उन्हें बंदरगाह से जोड़ा।

? क्या आप जानते हैं

थाईलैंड या सियाम एक स्वतंत्र राज्य बना रहा है भले ही यह भारत - चीन में फ्रांसिसि विजय और म्यांमार में ब्रिटिश के बीच संधि थी?

4.5 साम्राज्यवाद के प्रभाव

साम्राज्यवाद ने एशिया और अफ्रीका के इतिहास में एक महत्वपूर्ण भूमिका निभाई। उन्होंने एशिया और अफ्रीका के देशों के धन और कच्चे माल व अपने औद्योगिक माल की ब्रिकी के लिए इनके बाजारों का बहुत फायदा उठाया। इन कालोनियों की अर्थव्यवस्था को नष्ट किया। नस्लीय भेदभाव

की उनकी नीति ने लोगों को अपने स्वयं के रूप में पूरी तरह से उनके आत्मविश्वास सम्मान को खो दिया। आप भारत पर अगले कुछ सबक में इसके बारे में और अधिक पढ़ा होगा।

4.5.1 साम्राज्यवाद का सकारात्मक प्रभाव

साम्राज्यवादी शासन का उपनिवेशों पर कुछ सकारात्मक प्रभाव पड़ा है। जैसे रेलवे लाइनों, नहरों, टेलीग्राफ और टेलीफोन की तरह परिवहन और संचार की शुरुआत की। इसने राजनैतिक चेतना और राज्यों में राष्ट्रवाद की भावना का विकास करने के लिए नेतृत्व किया। आधुनिक शिक्षा और विज्ञान को विकसित करने के बाद वे अपनी स्वतंत्रता प्राप्त करने में सफल हुए।

20वीं सदी में मानव इतिहास में किसी अन्य अवधि की तुलना में अधिक वैज्ञानिक खोजों और आविष्कारों को देखा गया, यह भाप चालित जहाजों के साथ शुरू हुआ, अंतरिक्ष में मानव यात्रा, चांद पर उतरने और पाठ्यक्रम के कंप्यूटर के नेटवर्क के साथ समाप्त हो गया। दुनिया त्वरित संचार और तेजी से परिवहन के साथ सिकुड़ गया।

दुर्भाग्य से पूरी दुनिया को साम्राज्यवादी प्रतिद्वंद्विता और आर्थिक उद्देश्य ने प्रभावित किया। इसने यूरोपीय देशों के बीच तनाव, दो विश्व युद्धों में अमेरिका और जापान को उलझाया।

1. साम्राज्यवाद कालोनियों पर एक विनाशकारी प्रभाव पड़ा है।
2. उपनिवेशों के स्वदेशी उद्योग (परंपरागत) बर्बाद हो गए थे।
3. उपनिवेशों के प्राकृतिक संसाधनों का बेरहमी से शोषण।
4. सभी उपनिवेशों की कृषि व्यवस्था को गंभीर रूप से विकृत किया गया था।
5. चीन का प्रभाव के क्षेत्रों में विभाजित किया गया था और अंतरराष्ट्रीय व्यापार के लिए खोल दिया।
6. अफ्रीका, लाइबेरिया और इथियोपिया को छोड़कर शेष की पूरे यूरोपीय देशों के बीच विभाजित किया गया था।
7. अफ्रीकियों का बड़ी संख्या में दास के रूप में बेचा जा रहा था।
8. दक्षिण अफ्रीका में सफेद समुदाय ने त्वचा के आधार पर बीमार अश्वेतों का इलाज किया। इसे नस्लीय भेदभाव या रंगभेद कहा जाता है।

भारत में अंग्रेज व्यापारियों के रूप में आये थे। लेकिन शासक बन गये। उन्होंने हमारी समृद्ध अर्थव्यवस्था को नष्ट कर दिया। भारत जो कपड़ा का एक निर्यातक था तैयार कच्चे माल और माल के निर्यातक का एक खरीदार बन गया। इसके अलावा, भारी कराधान ने जनता की गरीबी का नेतृत्व किया।

पाठगत प्रश्न 4.2

1. साम्राज्यवाद को परिभाषित करें।
2. साम्राज्यवाद के प्रसार से हुए परिवहन विकास के दो लाभों का उल्लेख करें।

4.6 प्रथम विश्व युद्ध

औद्योगीकरण, उपनिवेशवाद और साम्राज्यवाद ने एशिया और अफ्रीका में उपनिवेशों की उनकी संपत्ति पर यूरोपीय देशों के बीच तीव्र प्रतिद्वंद्विता शुरू की। यह प्रतियोगिता 19वीं सदी के अंत तक और अधिक तीव्र हो गयी जब उपनिवेश एशिया और अफ्रीका में न उपलब्ध थे। समझौता आपसी अविश्वास और दुश्मनी के कारण संभव नहीं था और 1914 में, यूरोप में जल्द ही पूरी दुनिया से घिरा एक युद्ध हुआ। इसमें दुनिया के सभी प्रमुख देशों और उनके उपनिवेशों को शामिल किया गया। इस युद्ध की वजह से नुकसान की इतिहास में कोई मिसाल न थी। इतिहास में पहली बार के लिए युद्धरत राज्यों के सभी संसाधन जुटाए गए थे। इसमें उनकी सेना, नौसेना और वायु सेना को शामिल किया गया। नागरिक आबादी को अंधाधुंध बमबारी की वजह से जबरदस्त संख्या में दुर्घटना का सामना करना पड़ा। यह युद्ध पहली बार दुनिया के एक बहुत बड़े भाग पर फैल गया था, इस विश्व युद्ध को दुनिया के इतिहास में एक मोड़ के रूप में जाना जाता है। यह एक अचानक घटी घटना नहीं थी बल्कि सेना के विकास और 1914 से पहले से चल रहे विस्तार की चरम सीमा थी।

4.6.1 प्रथम विश्व युद्ध के कारण

इंग्लैंड, फ्रांस जर्मनी और दूसरी की तरह विभिन्न देशों के बीच प्रतिद्वंद्विता साम्राज्यवादी युद्ध का एक प्रमुख कारण थे। इससे पहले युद्ध टल गया क्योंकि अधिक उपनिवेशों के अधिग्रहण की संभावनाओं अभी भी वहां थी। लेकिन अब स्थिति बदल गई थी। अधिकांश एशिया और अफ्रीका को पहले से ही विभाजित किया जा चुका था और आगे विस्तार की संभावनाओं वहां नहीं थी। अब केवल साम्राज्यवादी देशों के उपनिवेशों पर कब्जा करना ही संभव था। उपनिवेशों के इस बंटवारे ने युद्धों को संभव बनाया। 19वीं सदी के आखिरी तिमाही में, जर्मनी ने जबरदस्त आर्थिक और औद्योगिक प्रगति कर ली थी और इंग्लैंड और फ्रांस का औद्योगिक उत्पादन में काफी पीछे छोड़ दिया था। उसे भी ब्रिटेन की तरह आर्थिक जरूरतों को पूरा करने के लिए उपनिवेशों की आवश्यकता थी। साम्राज्यवादी दौड़ में, जर्मनी इंग्लैंड के मुख्य प्रतिद्वंद्वी बन गया। ब्रिटिश के नौसेना वर्चस्व को भी चुनौती दी गई थी जब जर्मनी का सबसे बड़ा युद्धपोत का निर्माण कर उस को कील लहर से उत्तरी सागर और बाल्टिक सागर अंग्रेजी तट रेखा से जोड़ा गया था। जर्मनी में भी एक रेलवे लाइन बगदाद के साथ बर्लिन को जोड़ने की रेखा है। जिससे आसान करने के लिए जर्मनी के सैनिकों या पूर्व के लिए आपूर्तिकर्ताओं को भेजना असान बनाने का निर्माण किया। लेकिन इसे वहां ब्रिटिश उपनिवेशों के लिए एक खतरा समझा गया।

जर्मनी की जापान और यूरोप की अन्य सभी प्रमुख शक्तियों की तरह ही अपनी साम्राज्यवादी महत्वाकांक्षा थी। इटली अपने एकीकरण के बाद उत्तरी अफ्रीका में त्रिपोली, जो तुर्क साम्राज्य के अधीन था चाहता था। फ्रांस मोरक्को को अफ्रीका में अपनी विजय से जोड़ना चाहता था जबकि रूप ईरान में अपनी महत्वाकांक्षा रखता था। जापान के सुदूर पूर्व में उसकी महत्वाकांक्षा थी जहां वह 1905 के रूप - जापानी युद्ध के बाद उसके प्रभाव का विस्तार करने में सक्षम था। ऑस्ट्रिया, आटोमन साम्राज्य में उसकी महत्वाकांक्षा थी, जबकि अमेरिका संयुक्त राज्य अमेरिका एक शक्तिशाली राष्ट्र के रूप में उभर रहा था। उसकी मुख्य दिलचस्पी के लिए व्यापार की स्वतंत्रता

की रक्षा के रूप में थी इसलिए वह एक तेज गति से बढ़ रहा था। किसी भी महान शक्ति के प्रभाव के विस्तार विश्व शांति के लिए एक बड़ा खतरा साबित हो सकता था।

4.6.2 गठबंधन की प्रक्रिया

अधिक कालोनियों के लिए विरोध और टकराव ने साम्राज्यवादी शक्तियों का सहयोगी दलों के लिए देखने के लिए प्रेरित किया। 1882 में, जर्मनी आस्ट्रिया, इटली ने ट्रिपल एलायंस पर अपनी विरोधी शक्तियों के खिलाफ आपसी सैन्य सहायता की संधि पर हस्ताक्षर किया। इंग्लैंड, रूस और फ्रांस ने 1907 में ट्रिपल अंतंत पर हस्ताक्षर किए। दो परस्पर शत्रतापूर्ण विरोधी समूहों के उद्भव और यूरोपीय शक्तियों के बीच तनाव और संघर्ष ने यूरोप को दो गुटों में विभाजित कर दिया। इन देशों में एक दूसरे से घातक हथियार रखने की चाह ने हथियारों के उत्पादन की दौड़ का नेतृत्व किया। आपसी नफरत और संदेह ने शांति के वातावरण समाप्त किया। इस बात का स्पष्ट प्रचार किया गया कि अगर युद्ध हुआ तो पूरा यूरोप युद्ध में डूब जाएगा।

4.6.3 पान स्लाव आंदोलन और वाल्कन राजनीति

पूर्वी यूरोप के बाल्कन क्षेत्र में ग्रीस, रोमानिया, बुल्गारिया, सर्बिया, मोंटेनेग्रो और कई अन्य छोटे राज्य शामिल थे। मूलतः ये राज्य तुर्क सम्राट या तुर्की के शासक के नियंत्रण के अधीन थे। 20वीं सदी की शुरूआत से, तुर्क साम्राज्य में गिरावट शुरू हुई। ऑस्ट्रिया और रूस समेत कई यूरोपीय शक्तियां इस क्षेत्र में पैर जमाने के लिए पहुंची। बात तब और जटिल बनी जब इन राज्यों के अधिकांश में लोगों में राष्ट्रवाद का पुनरुत्थान हुआ। इन्हें स्लाव कहा जाता था। वे पूर्वी यूरोपीय देशों के कई राज्यों में बिखरे हुए थे। इन्होंने एक राष्ट्रीय आंदोलन शुरू कर दिया और इसको पान स्लाव आन्दोलन कहा जाता है। उनकी मुख्य मांग सर्बिया, क्योंकि सर्विया जनसंख्या के तहत एक स्लाव राज्य था। सर्बिया का रूस द्वारा समर्थन किया गया था, जबकि ऑस्ट्रिया ने सर्बिया और उनके राष्ट्रीय आंदोलन का विरोध किया। इससे रूस और ऑस्ट्रिया के बीच प्रतिद्वंद्विता में हुई। ऑस्ट्रिया मजबूत सर्बियाई राज्य है जो अपने विस्तार की महत्वाकांक्षा में बाधा नहीं चाहता था। 1908 में, ऑस्ट्रिया ने दो स्लाव राज्यों बोस्निया और हर्जेगोविना पर कब्जा कर लिया जो सर्बिया और ऑस्ट्रिया के बीच दुश्मनी का कारण बना। 1912 और 1914 के बीच, चार बाल्कन राज्यों ने स्वतंत्रता के लिए से तुर्क सम्राट के खिलाफ युद्ध लड़े। तुर्की हार गया। और यूरोप में उसकी संपत्ति समाप्त हो गई। ऑस्ट्रिया ने जल्दी से सर्बियाई ग्रेटर सर्बिया की महत्वाकांक्षा के खिलाफ अल्बानिया के एक स्वतंत्र राज्य की स्थापना की। दुश्मनी में एक तरफ सर्बिया और रूस थे तो दूसरे तरफ ऑस्ट्रिया था।

जैसा कि आप 1914 के द्वारा देख सकते हैं, यूरोप में माहौल विस्फोटक था। इस पृष्ठभूमि के खिलाफ फ्रांसिस फर्डिनांड, ऑस्ट्रिया के सिंहासन के लिए वारिस, एक राज्य की यात्रा पर सारायेवो, बोस्निया की राजधानी के लिए गये। वह अपनी कार से नीचे उतर रहे थे कि एक सर्बियाई युवा के द्वारा 28 जून 1914 को उनकी हत्या कर दी गई। आर्थडियूक फ्रासिंस फर्डिनेंड की हत्या युद्ध का तत्कालिक कारण बन गयी। ऑस्ट्रिया ने सर्बिया को अपने राजकुमार की हत्या के लिए जिम्मेदार ठहराया और उसे विभिन्न शर्तों के साथ एक अंतिम चेतावनी दी। रूसी मदद का आश्वासन दिया

है, सर्बिया ने अल्टीमेटम स्वीकार करने से इनकार कर दिया और सीमा पर अपने सैनिकों को जुटाने शुरू कर दिया। 28 जुलाई 1914, ऑस्ट्रिया ने सर्बिया पर युद्ध की घोषणा की। 1 अगस्त 1914, जर्मनी ने रूस पर युद्ध की घोषणा की। 3 अगस्त 1914 में, जर्मनी ने फ्रांस पर युद्ध की घोषणा की। जर्मन सैनिकों ने बेल्जियम में प्रवेश किया, इंग्लैंड ने जर्मनी पर युद्ध की घोषणा अगस्त 1914 में की। इस प्रकार यूरोप में एक छोटी सी घटना में सभी देशों के शामिल होने से युद्ध ने जल्द ही विश्व युद्ध का आकार ले लिया।

पाठगत प्रश्न 4.3

1. किन देशों ने ट्रिपल एलायंस का गठन किया?
2. बाल्कन युद्ध किन देशों के बीच लड़े गए?

4.6.4 प्रथम विश्व युद्ध की कार्य विधि (1914-1918)

9 अगस्त 1914 में जो विश्व युद्ध शुरू हुआ नवंबर 1918 तक जारी रहा। इस अवधि के दौरान कई महत्वपूर्ण लड़ाईयां लड़ी गयी जैसे 1914 मार्ने की लड़ाई, 1916 में वेर्दू की लडत्रई सोमे की लड़ाई, जूटलैक्ड की लड़ाई।

1917 वर्ष दो महत्वपूर्ण घटनाओं को देखा गया। इस युद्ध में संयुक्त राज्य अमेरिका की प्रविष्टि थी। दूसरी नवंबर में रूस का इस युद्ध से अलग होना। 1915 में, एक ब्रिटिश यात्री जहाज लूसिपनिया के जर्मन की यू बोट की डूबा दिया जिसमें 128 अमेरीकी-नागरिक यात्रा कर रहे थे। उनकी हत्या हो गयी थी। अमेरिकी सीनेट ने इसे बहुत गंभीरता से लिया। एक शक्तिशाली राष्ट्र बनने के अलावा, जर्मनी अमेरिकी सर्वोच्चता के लिए खतरा पैदा कर सकता है। इसके अलावा संयुक्त राज्य अमेरिका हथियार और गोला बारूद का एक प्रमुख आपूर्तिकर्ता बनता जा रहा था। युद्ध की निरंतरता के कारण अमरीका के आर्थिक लाभ में वृद्धि हुई। इन सब को ध्यान में रखते हुए, उसने युद्ध में शामिल होने का फैसला किया।

दूसरी बड़ी घटना रूस का युद्ध से अलग होना था। क्या आप को रूस की 1917 की अक्टूबर क्रांति के बारे में पढ़ा याद है? क्रांतिकारियों की मुख्य मांगों में से एक शांति थी। तो तुरंत लेनिन के नेतृत्व में क्रांति के बाद, रूस युद्ध से अलग हो गया और 1918 में जर्मनी के साथ एक शांति संधि पर हस्ताक्षर किए।

जुलाई 1918 से जर्मनी पतन शुरू हुआ। बुल्गारिया और तुर्की ने सितंबर और अक्टूबर में क्रमशः आत्मसमर्पण कर दिया। 3 नवंबर 1918 में, ऑस्ट्रिया के सम्राट ने ऑस्ट्रिया में व्यापक असंतोष के कारण आत्मसमर्पण कर दिया। जर्मन लोगों द्वारा इसी तरह के विद्रोहों करने के बाद, जर्मन सम्राट विल्हेम द्वितीय हॉलैंड भाग गये और जर्मनी एक गणराज्य घोषित किया गया। नई सरकार पर 11 नवंबर 1918, विश्व युद्ध के अंत के लिए एक युद्धविराम पर हस्ताक्षर किए।

युद्ध के दौरान, मशीनगन, जहर गैस, तरल आग, पनडुब्बी और टैंक के रूप में कई नए हथियारों का इस्तेमाल किया गया। नई रणनीतियों और सैन्य तकनीक दोनों पक्षों द्वारा प्रयोग किया गया।

इंग्लैंड ने नौसेना और आर्थिक नाकेबंदी, टैंकों और हवाई हमलों का इस्तेमाल किया। फ्रांसिसियों ने युद्ध में गहरी इस्तेमाल रणनीति का और जर्मनी यूं नाव और पनडुब्बियों का समुद्र में जहाज डूबने के लिए इस्तेमाल किया।

4.6.5 प्रथम विश्व युद्ध के तात्कालिक परिणाम

प्रथम विश्व युद्ध के दुनिया की सबसे विनाशकारी और भयावह घटनाओं के रूप में देखा जाता है। निर्दोष नागरिकों सहित एक लाख लोगों को उनके जीवन से हाथ धोना पड़ा। अधिकांश यूरोपीय देशों में बड़े पैमाने पर संपत्ति का नुकसान हुआ। कुल खर्च 180 अरब डॉलर के चौंका देने वाले आंकड़े का अनुमान लगाया गया था। जिसके परिणामस्वरूप अधिकांश देशों की अर्थव्यवस्था टूटने लगी और चारों तरफ सामाजिक तनाव, बेरोजगारी और गरीबी फैल गई।

जनवरी से जून 1919 के बीच, मित्र देश की शक्तियाँ, वरसाई के महल में सम्मेलन में मिले थे जिसमें पेरिस को पराजित शक्तियों का भविष्य तय करना था। हालांकि लगभग 27 देशों के प्रतिनिधियों ने सम्मेलन में भाग लिया, निर्णय ब्रिटेन, फ्रांस और संयुक्त राज्य अमेरिका के राज्यों के प्रमुखों द्वारा लिया गया। रूस को बाहर रखा गया था और पराजित शक्तियों को इसमें भाग लेने के अनुमति नहीं थी। मित्र राष्ट्रों ने पराजित शक्तियों के साथ विभिन्न संधियों पर हस्ताक्षर किए। उनमें से सबसे महत्वपूर्ण वर्साय की संधि पर जर्मनी के साथ हस्ताक्षर किए, ऑस्ट्रिया के साथ सेंट जर्मेन की संधि और तुर्की में साथ कार्य करने की संधि थी। वर्साय को संधि से जर्मनी, राजनीतिक, आर्थिक और सैन्य रूप से बिखर गया। जर्मनी को आक्रामकर्ता का दोषी ठहराया गया था और युद्ध के लिए मुआवजे के रूप में पैसे की एक बड़ी राशि का भुगतान करने के लिए कहा। अल्सेस और लारेन को फ्रांस में 1871 में मिला लिया गया था। राइनलैंड, फ्रांस और जर्मनी के बीच का गैरसैन्यकरण किया हुआ और मित्र देशों की शक्तियों के नियंत्रण के अंतर्गत लाया गया था। कोयला समृद्ध सार घाटी 15 साल के लिए फ्रांस को दे दिया गया था। जर्मन सेना को भंग किया गया था। जहाजों को डूबा दिया गया और केवल 100,000 सैनिकों को प्रतिबंधित किया गया था। जर्मनी को उसके सभी उपनिवेशों से वंचित किया गया था। यूरोप में उसके बहुत से प्रदेशों को बेल्जियम और पोलैंड को दे दिए गए।

सेंट जर्मेन की संधि में ऑस्ट्रिया से हंगरी को अलग किया गया और हंगरी को एक स्वतंत्र राज्य बनाया गया था। ऑस्ट्रिया से हंगरी को स्वतंत्रता इसलिए प्रदान की थी कि उसे अपने प्रदेशों के हिस्से चेकोस्लावाकिया, रोमानिया और यूगोस्लाविया को देने के लिए बाध्य किया गया। सेवर्स की संधि ने तुर्क साम्राज्य का पतन कर दिया। इसके कुछ राज्यों के जनादेश के रूप में मित्र देशों के अधिकार में दिया गया। उदाहरण के लिए, फिलिस्तीन और मेसोमोटामिया फ्रांस ब्रिटेन और सीरिया को दिया गया। मित्र देश इन देशों को तब तक देखेंगे जब तक वे आत्मनिर्भर नहीं बन जाते।

युद्ध और शांति संधियों ने दुनिया के विशेष रूप से यूरोप के राजनीतिक नक्शे के बदल दिया। रूस में अक्टूबर क्रांति के बाद रोमानिया की सत्तारूढ राजवंश को परास्त किया गया था। युद्ध के अंत के द्वारा, जर्मनी और ऑस्ट्रिया की होलजोलर राजवंश हैप्सवर्ग राजवंश को हटा दिया गया और गणराज्य सरकार को स्थापित किया गया था। 1922 में एक क्रांति के बाद तुर्की में

भी राजशाही समाप्त कर दिया गया था। पराजित शक्तियों के लिए गए प्रदेशों से दो नए राज्यों चेकोस्लावाकिया और यूगोस्लाविया को बनाया गया। हंगरी एक स्वतंत्र राज्य के रूप में उभरा। एस्टोनिया, लिथुआनिया, लातविया और फिनलैंड स्वतंत्र राज्य के रूप में उभरे। रूमानिया और पोलैंड के राज्यों के आकार बढ़ा दिए गए। इसने यूरोप के अधिकांश राज्यों की सीमाओं में बदलाव कर दिया गया।

यह स्पष्ट था कि पराजित शक्तियों के साथ किए गए शांति समझौते असमान और जबरदस्ती पराजित शक्तियों पर थोपे गए समझौते थे। वे बिना विचार-विमश के हुए थे। युद्ध के अंत में यूरोपीय वर्चस्व के अंत को और सोवियत संघ और संयुक्त राज्य अमेरिका की प्रमुख शक्तियों के रूप में उद्भव को देखा। इसी अवधि में एशिया और अफ्रीका के देशों में भी राष्ट्रीय आंदोलन को मजबूत बनाते देखा गया। इससे पहले भी नवंबर 1918 में युद्ध समाप्त होता, अमेरिकी राष्ट्रपति वुडरो विल्सन ने एक शांति कार्यक्रम प्रस्तावित किया जिसे विल्सन के चौदह सूत्रों के रूप में जाना जाता था। इसकी सबसे महत्वपूर्ण बात दुनिया में शांति और सुरखा बनाए रखना था। इस प्रस्ताव के आधार पर, लीग ऑफ नेशंस 1920 में स्थापित किया गया था।

4.6.6 लीग ऑफ

1920 में स्थापित प्रथम अंतर्राष्ट्रीय लीग संगठन जिसका मुख्य कार्यालय जिनेवा में रखा गया था। इसका मुख्य उद्देश्य दुनिया में शांति और सुरक्षा बनाए रखना, भविष्य के युद्ध को रोकने अंतरराष्ट्रीय सहयोग को बढ़ावा देने अंतरराष्ट्रीय विवादों को शांतिपूर्ण ढंग से निपटाने और सदस्य देशों में श्रमिकों की स्थिति में सुधार करना था। लेकिन दुर्भाग्य से, लीग के लिए जिसके लिए यह स्थापित किया गया युद्ध और संघर्ष को रोकने में विफल रहा। जब जापान ने 1936 में मचुरिया पर हमला किया और 1935 में इटली ने इथियोपिया पर हमला, लीग कुछ नहीं कर सका।

क्रियाकलाप 4.4

"पृथ्वी प्रत्येक व्यक्ति की आवश्यकता पूर्ण करने के लिए देती है परंतु प्रत्येक मनुष्य की लालसा के लिए नहीं" महात्मा गांधी। क्या आप समझते हैं कि इस उद्धृण में सच्चाई है? उदाहरणों की सहायता से उचित सिद्ध करो।

पाठगत प्रश्न 4.4

निम्न सवालों का जवाब :

1. लीग ऑफ नेशंस के मुख्यालय कहां स्थित था?
2. लीग ऑफ नेशंस कब और किसके प्रस्ताव पर बनाई गई?

4.7 दो विश्व युद्धों के बीच दुनिया

दो विश्व युद्धों के बीच बीस साल की अवधि में महत्वपूर्ण परिवर्तन का अनुभव किया गया। एक तरफ सकारात्मक परिवर्तन जैसे राष्ट्रीय चेतना का विकास एशिया और अफ्रीका के देशों और सोवियत संघ में तथा अन्य देशों में समाजवादी आंदोलन लोकप्रिय हुआ। दूसरी तरफ दुनिया के कई देशों में विशेष रूप से यूरोप के इटली और जर्मनी देशों में तानाशाही का सबसे बुरा रूप देखा गया। इसी समय अमेरिका में 1929 में महामंदी देखी गई जिसने दुनिया के लगभग हर हिस्से को प्रभावित किया।

4.7.1 फासीवाद और नाजीवाद के विकास के कारण

युद्ध के बाद, यूरोप में बड़ी संख्या में राजनीतिक आंदोलनों पैदा हुए जिन्हें फासिस्म नाम दिया गया था। जिसका मुख्य उद्देश्य तानाशाही की स्थापना करना था। इन्हें शासकों व उच्च वर्ग के अभिजात और पूंजीपतियों द्वारा समर्थन प्राप्त था। क्योंकि उसने उन्हें समाजवाद के खतरे से बचाने के लिए वादा किया था। उन्होंने हत्या और आतंकवाद का एक व्यवस्थित अभियान चलाया उसे रोकने में सरकार ने कम रूचि दिखाई।

मुसोलिनी द्वारा इटली में शुरू कि गई तानाशाही को फासीवाद के रूप में देखा जाता है। फासीवाद एक लैटिन शब्द है प्राचीन रोम में जिसका अर्थ सत्ता के अधिकार या सत्ता प्रतीक था। 1922 में, मुसोलिनी इटली के राजा के समर्थन के साथ सत्ता में आया और 1925 से 1943 तक तानाशाह की तरह शासन किया। मुसोलिनी ने सभी राजनीतिक दलों पर प्रतिबंध लगा दिया और कुछ शरू किए लोग का समर्थन प्राप्त करने के लिए विजयी शक्तियां का अहंकार, युद्ध के बाद की समस्याओं से निपटने के लिए मौजूदा सरकारों की अक्षमता फासीवाद की जांच करने में राष्ट्र और लोकतांत्रिक ताकतें विफल रही, लीग की लाचारी ने तानाशाही की वृद्धि को संभव बनाया है।

फासीवाद को जर्मन में नाजीवाद के रूप में जाना जाता है। यह एडॉल्फ हिटलर द्वारा स्थापित किया गया था। उसने युद्ध के बाद बस्तियों को वापस लेने और जर्मनी शक्ति और महिमा को बहाल करने का वादा किया। जर्मनी में एक महान राष्ट्र के पुनर्निर्माण की उसकी दृष्टि ने कई जर्मनियों को उसके साथ शामिल होने के लिए प्रेरित किया। उसके इस कार्य ने लोगों को प्रथम विश्व युद्ध के घावों पर मल्हम का काम किया बहुत लोगों ने उसको इसलिए समर्थन दिया क्योंकि उसने उनसे आर्थिक गिरावट को दूर करने का वादा किया था। नाजियों की सफलता न केवल जर्मन लोगों के लिए बल्कि यूरोप और पूरी दुनिया के कई अन्य भागों के लिए विनाशकारी साबित हुई। इसने हंगरी, रूमानिया, पुर्तगाल और स्पेन में स्थापित तानाशाही का नेतृत्व किया। बहुत से देशों में बन रही लोकतांत्रिक विरोध सरकार के विकास ने द्वितीय विश्वयुद्ध का नेतृत्व किया।

4.7.2 विश्व के अन्य भागों में विकास

इंग्लैंड और फ्रांस को गंभीर आर्थिक संकट का सामना करना पड़ा अभावों और बेरोजगारी के बावजूद वे अपने लोकतांत्रिक सरकारों के साथ चलते रहे। इंग्लैंड में मजदूर हड़ताल व कई और तरह की समस्याओं के रहते इन्हें 1931 में सांझी सरकार बनानी पड़ी। लेबर, लिबरल, व कंजरर्वेटिव

दल के सहयोग से हल करने की कोशिश की गई। 1936 में वामपंथी पार्टियों को मिलाकर एक लोकप्रिय सरकार फ्रांस में बनाई गई।

सोवियत संघ दुनिया के पहले समाजवादी देश के रूप में उभरा। नई सरकार के तहत समाजवादी सिद्धांतों को अर्थव्यवस्था में कार्यान्वित किया गया। और केवल यही एक देश था जो महामंदी से प्रभावित नहीं हुआ। जबकि 1929 में सभी पश्चिमी पूंजीवादी देशों को आर्थिक मंदी का सामना करना पड़ा।

हालांकि संयुक्त राज्य अमेरिका ने प्रथम विश्व युद्ध में भाग लिया, लेकिन इसको कुछ खास हानि नहीं हुई। औद्योगिक समृद्धि, राजनीतिक स्थिरता और आर्थिक विकास ने इसे एक सुपर पावर बना दिया। हालांकि, वह 1929 अत्यधिक उत्पादन के कारण इसे सबसे खराब आर्थिक संकट का सामना करना पड़ा। वस्तुओं की कीमतों, शेयर की कीमतों में गिरावट आ गई। बैंकों को बंद कर दिया और लोगों को उनके आजीव बचत को खाना पड़ा। ऋण जिसे संयुक्त राज्य अमेरिका यूरोपीय देशों से विश्व युद्ध के बाद वापस लेना था। लेकिन यूरोपीय देशों में भी आर्थिक अस्थिरता आई हुइ थी। फ्रैंकलिन रुजवेल्ट के नेतृत्व में अमेरिका में जब नई सरकार सत्ता में आई तो इसने-न्यू डील नामक आर्थिक पूनर्निमाण का कार्यक्रम प्रस्तुत किया। इसके तहत कई जनकल्याण के कार्य प्रारंभ किए गए थे जैसे नए रोजगार के अवसर, किसानों को सहयोग आदि।

केवल जपान ही एशिया का एक ऐसा देश था जो एक साम्राज्यवादी देश के रूप में उभरा। इसने रूस को 1905 में हरा दिया था। इसके बारे में आप पढ़ चुके है। विश्व युद्ध के बीच में जापान एक सैन्य शक्ति बन गया था, तथा इसने फासीवाद का समर्थन किया था। एंटीकीमेटेन समझौते पर भी इटली व जर्मली के साथ हस्ताक्षर किये ताकि साम्यवाद का प्रसार रोका जा सके।

पाठगत प्रश्न 4.5

1. उन दो देशों के नाम लिखिए जहां 1920 के बाद तानाशाही सरकारें बनी?
2. फ्रेंकलिन रुजवेल्ट द्वारा शुरू किए गए आर्थिक सुधार वसूली के कार्यक्रम का क्या नाम है?

4.8 द्वितीय विश्व युद्ध

हम लीग ऑफ नेशन्स के बारे में पढ़ चुके है कि किस प्रकार यह अपने संगठन के 20 वर्षों के बाद भी अपने उद्देश्य को पाने विफल रहा जबकि इसका गठन भविष्य में होने वाले युद्धों को रोकने के लिए किया गया था। युद्ध की परिस्थितियां बनने के बाद 3 सितंबर 1939 में द्वितीय विश्वयुद्ध प्रारंभ हो गया। यह युद्ध कैसे प्रारंभ हुआ? आइये इसके कारणों का परीक्षण करें।

4.8.1 द्वितीय विश्व युद्ध के कारण

द्वितीय विश्व युद्ध से पहले यूरोप में शुरू हुए युद्धों ने ही एक विश्व युद्ध का रूप धारण कर लिया था। फासीवादी देशों ने विश्व को दोबारा से साम्राज्यवादी लाभ के लिए विभाजित करना चाहा जिससे विभिन्न देशों के बीच संघर्ष पनपा।

जर्मनी वर्साय सन्धि के द्वारा राजनीतिक, सैन्य और आर्थिक दृष्टि से पूर्णतया बिखर गया। उसने बदला लेने की मांग की और मित्र देशों से शक्ति के एक परीक्षण के लिए तैयार था। इटली की स्थिति भी बेहतर नहीं थी। हालांकि इटली साम्राज्य लाभ की उम्मीद के साथ प्रथम विश्व युद्ध के दौरान मित्र देशों की शक्तियों में शामिल हुआ था, परन्तु युद्ध के बाद उसे कोई भी उपनिवेश हासिल नहीं हो सका। उसने युद्ध के दौरान लगभग 600-1000 लोगों को खो दिया। दोनों फासिस्ट और नाजी दलों ने अपने लोगों से वादा किया था कि वे युद्ध के माध्यम से अपने देश का खोया गौरव वापस लाएंगे। उन्होंने विजय अभियान के माध्यम से विस्तार की आक्रामक नीति का पालन शुरू कर दिया। जर्मनी के राइनलैंड पर 1936 में 1938 में ऑस्ट्रिया पर कब्जा कर लिया। और चेकोस्लोवाकिया को 1938 में जीत लिया, जबकि इटली ने थियोपिया पर हमला किया। इससे यूरोपीय देशों के बीच सामाजिक तनाव और संघर्ष पैदा हुआ।

आप जापान का एक सैन्य शक्ति के रूप में उभरना व फासीस्ट शक्तियों को समर्थन देने की बात पढ़ चुके है। रोम - बर्लिन - टोक्यो की धूरी पर हस्ताक्षर कर तीनों शक्तियों परस्पर एक दूसरे के समर्थन प्रतिबद्ध हो गए। जापान को स्वतंत्र छोड़ दिया गया एशिया और प्रशांत के क्षेत्र में नियंत्रण करने के लिए जबकि जर्मनी और इटली को यूरोप में मनमानी करने की अनुमती मिल गई।

सोवियत संघ की सफलता ने पश्चिमी शक्तियों को चौकन्ना कर दिया। पूंजीवादी देश होने के कारण वे अपने देशों में साम्यवाद के प्रसार को रोकना चाहते थे। इटली और जर्मनी, जो कम्युनिस्ट विरोधी थे। इसलिए इन्होंने इनके प्रति एक सुव्यवस्थित अनुग्रह नीति अपनाई। इस नीति को तुष्टीकरण नीति के रूप में देखा जाता है। प्रथम विश्व युद्ध के बाद जर्मन सेना को 100, 000 सैनिकों पर प्रतिबंधित किया गया था। जर्मनी ने बिना पश्चिम शक्तियों के सुरक्षा के अपने सैनिकों की संख्याा 800,000 कर ली। यहां तक कि जब हिटलर ने वर्साय की संधि का परित्याग किया और राइनलैंड और ऑस्ट्रिया पर कब्जा कर लिया, तब भी पश्चिमी शक्तियों मूक दर्शक बने रहे। 1937 में, जनता की लोकप्रिय निर्वाचित सरकार और जनरल फ्रेंको, फासिस्ट नेता के बीच स्पेन में युद्ध शुरू हुआ। स्पेन में लोकतांत्रिक ढंग से निर्वाचित सरकार को अपदस्थ करने के लिए हिटलर के हथियार और गोला बारूद से सहायता की पूर्ति करने के लिए सोवियत संघ ने जनरल फ्रेंको के खिलाफ सामूहिक कार्रवाई के लिए इंग्लैंड से अपील की। जब मौजूदा सरकार इंग्लैंड और फ्रांस की सरकारों ने कोई भी कार्रवाई नहीं की। यह तुष्टीकरण नीति अपने चरमोत्कर्ष पर पहुंच गया जब अगस्त 1938 में हिटलर म्यूनिख के लिए ब्रिटेन और फ्रांस के प्रधानमंत्री ने आमंत्रित किया। म्यूनिख संधि उनके द्वारा 1938 में हस्ताक्षर किए गए थे। जर्मनी को सुदेतनलैण्ड व चेकोस्लोवाकिया के उत्तरी भाग पर कब्जा करने की अनुमति मिल गई। बाद में पूरे चेकोस्लोवाकिया पर कब्जा कर लिया गया था। तुष्टीकरण की नीति फासीवादी शक्तियों को मजबूत किया।

अब यह स्पष्ट है कि ब्रिटेन और फ्रांस जर्मनी और इटली सोवियत संघ के खिलाफ कार्रवाई करना चाहते थे। इन योजनाओं पर रोकने के लिए सोवियत संघ द्वारा जर्मनी के साथ जो दोनों एक दूसरे पर हमला नहीं करने के एक समझौता पर हस्ताक्षर किए। इस तरह सोवियत संघ को कुछ समय मिल गया कि वह भविष्य की तैयारी कर ले तथा जर्मनी को सोवियत संघ को तटस्थ करने में सफलता मिल गई।

द्वितीय विश्व युद्ध दृश्य तब शुरू हुआ जब जर्मनी ने 1 सितंबर 1939 की पोलैंड पर हमला कर दिया और ब्रिटेन ने जर्मनी से 3 सितंबर 1939 को युद्ध की घोषणा की।

4.8.2 युद्ध का परिणाम

सितंबर 1945 में युद्ध का अंत हो गया। यह मानव इतिहास में सबसे विनाशकारी युद्ध था। इससे जान-माल और संसाधनों की अभूतपूर्व क्षति हुई। बड़े शहरों के सुंदर भवन मिट्टी में मिल गये। हजारों लोगों के अपने घरों से बेघर होना पड़ा। जर्मन यहूदियों को मार दिया गया था फिर उन्हें यत्रंणा शिविरों में भेज दिया गया। जापानी शहरों हिरोशिमा और नागासाकी पर अमरीका द्वारा परमाणु बम गिराए जाने से दोनों शहर अपनी जनता के साथ नष्ट हो गई। परमाणु प्रलय का खतरा युद्ध के प्रमुख परिणामों में से एक था। जर्मनी को 4 क्षेत्रों में विभाजित कर के प्रत्येक को विजयी शक्तियों के नियंत्रण किया गया था। नाजी पार्टी पर प्रतिबंध लगा दिया गया था और जर्मन सेना को भंग कर दिया गया था। जापान अमेरिका के निगरानी के अंतर्गत रखा गया था। 1949 में, जब राजतंत्र को फिर से स्थापित किया गया था, अमेरिकी सेना को हटा दिया गया।

साम्राज्यवाद के कमजोर होने के साथ-साथ और संयुक्त राज्य अमेरिका और सोवियत संघ सुपर शक्तियों के रूप में उभरे। द्वितीय विश्व युद्ध के बाद विश्व दो शक्ति गुटों में बंट गया। साम्यवादी गुट सोवियत संघ के नेतृत्व में तथा पश्चिमी गुट अमेरिका के नेतृत्व में। इन दो गुटों में तनाव व शस्त्रहीन संघर्ष के विकास को शीत युद्ध कहते है। जो दोनों देशों के बीच लम्बे समय तक चलता रहा।

युद्ध के एक प्रमुख प्रभाव संयुक्त राष्ट्र संगठन (संयुक्त राष्ट्र संघ) की स्थापना था जिसके बारे में आप अगले भाग में पढ़ोगे। दुनिया में तब से कई बदलाव हुए। इसका राजनीतिक नक्शा बदल गया। एशिया और अफ्रीका के जो देश औपनिवेशिक शासन के अधीन थे अब स्वतंत्र हो गए थे। अब वे दुनिया में एक प्रमुख शक्ति के रूप में है।

क्रियाकलाप 4.5

इस विश्व में विध्वंसक विश्व युद्ध होते रहे हैं और यह आज तक संघर्षो का साक्षी रहा है। कम से कम ऐसी 5 समस्याओं की सूची बनाओ जो विश्वशांति के आड़े आती हैं। इन मामलों को सुलझाने के तरीके बताओ और आप एक व्यक्ति के रूप में विश्व को रहने के लिए बेहतर बनाने के लिए कैसे योगदान दे सकते हैं।

4.9 संयुक्त राष्ट्र संगठन की स्थापना

युद्ध की विध्वंसता ने दुनिया के नेताओं को शांति के लिए एक अंतरराष्ट्रीय संगठन की जरूरत का एहसास कराया। ब्रिटिश प्रधानमंत्री विंस्टन चर्चिल, सोवियत नेता स्टालिन और अमेरिकी राष्ट्रपति रूजवेल्ट के रूप में विश्व के नेताओं के विभिन्न सम्मेलेनों में इस संगठन के गठन के बारे में फैसला करने के लिए मुलाकात की। अंत में, 24 अक्तूबर 1945 को सेन फ्रांसिस्को में एक सम्मेलन में संयुक्त राष्ट्र चार्टर के 50 देशों के सदस्यों द्वारा अपना लिया गया और संयुक्त

राष्ट्र संगठन (संयुक्त राष्ट्र संघ) की स्थापना हुई तब से दुनिया भर के सभी देश 24 अक्टूबर को संयुक्त राष्ट्र दिवस के रूप में हर साल मनाते है। संयुक्त राष्ट्र संघ सभी राष्ट्रों की संप्रभुता और समानता के सिद्धांत पर आधारित है। संयुक्त राष्ट्र संघ के मुख्य उद्देश्य दुनिया में शांति और सुरखा बनाए रखने के लिए, भविष्य के युद्ध को रोकने के लिए, अंतरराष्ट्रीय विवादों को शांतिपूर्ण ढंग से हल करने के लिए और अंतरराष्ट्रीय सहयोग को बढ़ावा देना हैं।

क्या आप जानते हैं

संयुक्त राष्ट्र संघ का ध्वज एक परिपत्र दुनिया के नक्शे, के रूप में उत्तरी ध्रुव से देखा, एक हल्के नीले रंग की पृष्ठभूमि पर केंद्रित सफेद में जैतून शाखाओं की एक माला से घिरा हुआ है की सरकारी प्रतीक होते हैं।

4.9.1 संयुक्त राष्ट्र संघ के उद्देश्य

प्रथम विश्व युद्ध के बाद स्थापित किये गये राष्ट्र संघ की तरह ही संयुक्त राष्ट्र भी अंतरराष्ट्रीय शांति और सुरक्षा बनाए रखने के एक प्रमुख उद्देश्य से स्थापित किया गया था। इसका भी समानता के आधार पर देशों के बीच मैत्रीपूर्ण संबंधों के विकास, और आर्थिक, सामाजिक, सांस्कृतिक और मानवीय समस्याओं को सुलझाने में अंतरराष्ट्रीय सहयोग प्राप्त करना था। दुनिया के लोगों के लिए मानव अधिकार और मौलिक स्वतंत्रता को बढ़ावा देना। संयुक्त राष्ट्र के उद्देश्य में से एक था। यह भी संयुक्त राष्ट्र के उद्देश्यों की प्राप्ति के लिए विभिन्न देशों के विभिन्न उद्देश्यों की प्राप्ति के लिए विभिन्न गतिविधियों में तालमेल करने के लिए राष्ट्रसंघ ने एक आम मंच के रूप में कार्य किया।

पाठगत प्रश्न 4.6

1. दो जापानी शहरों के नाम बताइये जहां द्वितीय विश्वयुद्ध के दौरान परमाणु बम गिराए गए?
2. कब और कहां संयुक्त राष्ट्र को औपचारिक रूप से गठित किया गया?

आपने क्या सीखा

- उपनिवेशवाद की नई लहर को नए साम्राज्यवाद के रूप में जाना जाता हैं उपनिवेशवाद 19वीं सदी की अंतिम चरण में शुरू हुआ।
- इस औपनिवेशक विस्तार के पीछे मुख्य कारक थे। औद्योगिक क्रांति के द्वारा बनाई गई जरूरतें, परिवहन और संचार का विकास, शक्ति अर्जित करने की इच्छा, उग्र राष्ट्रवाद श्वेतों का अश्वेतों को सभ्य बनाने की इच्छा।

- यूरोपीय देशों के बीच तीव्र साम्राज्यवादी होड़ और सैन्य गठबंधनों के निर्माण का परिणाम 1914 में प्रथम विश्व युद्ध भड़क उठने के रूप में सामने आया।
- इस युद्ध के मुख्य परिणाम इस प्रकार थेः वर्साय की सन्धि के रूप में जर्मनी के साथ कठोरता एवं अपमान जनक व्यवहार, पराजित शक्तियों से उनके उपनिवेशों का छीना जाना, यूरोप में महत्वपूर्ण क्षेत्रीय परिवर्तन, ऑटोमन साम्राज्य का बिखरना, हंगरी की स्वतंत्रता और संयुक्त राष्ट्र संघ की स्थापना था।
- 1919 से 1939 के बीच इटली में मूसोलिनी के नेतृत्व में फासीवाद और जर्मनी में नाजीवार का उभरना जिन्होंने लोकतंत्र, स्वतंत्रता, समाजवाद और साम्यवाद का दमन किया।
- पश्चिमी शक्तियों की तुष्टीकरण की नीति के अंत ने द्वितीय विश्व युद्ध के फैलने का नेतृत्व किया।
- द्वितीय विश्व युद्ध के परिणामों में संयुक्त राष्ट्र की संरचना, जर्मनी का विभाजन, साम्राज्यवादी शक्तियों का कमजोर पड़ना। एशिया और अफ्रीका में स्वतंत्र राज्यों के उद्भव प्रमुख थे।
- युद्ध के बाद की परिस्थितियों में संयुक्त राज्य अमेरिका और सोवियत संघ के रूप में दो महाशक्तियां उभर कर आई और दो सैन्य गुटों के बीच तीव्र शीत युद्ध की शुरूआत हुई।
- नव स्वतंत्र राष्ट्रों सहित भारत ने निर्गुट आंदोलन शुरू किया और दुनिया में शांति और सद्भाव के लिए इन देशों ने किसी के साथ गठबंधन नहीं करने का फैसला किया।

पाठांत प्रश्न

1. भारत पर साम्राज्यवाद के किन्हीं भी दो प्रभाव का उल्लेख कीजिए।
2. इंग्लैंड और जर्मनी के बीच प्रतिस्पर्धा के कोई दो कारण लिखिए जिससे प्रथम विश्व युद्ध शुरू हुआ।
3. प्रथम विश्व युद्ध के परिणामों की जांच कीजिए।
4. पश्चिमी शक्तियों ने इटली ओर जर्मनी के साथ तुष्टीकरण की नीति का पालन किया?
5. इटली और जर्मनी में फासिज्म में उदय के कारणों की जांच कीजिए।

पाठगत प्रश्नों के उत्तर

4.1

1. अच्छे घर, सफाई कचरे का पुनः चक्रण
2. सुख सुवधिाओं में बढ़ोतरी; पदार्थ की बहुलता
3. संयुक्त परिवार का टूटना व्यक्तिगत का प्रोत्साहन
4. कम मजदूरी में उपलब्ध

4.2

1. साम्राज्यवादी प्रवृत्ति भूमि या बाहर क्षेत्र के अधिग्रहण का एक इच्छा के लिए संदर्भित करता है।
2. कच्चे माल और तैयार माल का साम्राज्यवादी देश उपनिवेशों से लाया और ले जाया जा सकता था।

4.3

1. ऑस्ट्रिया, जर्मनी, इटली त्रिगुट अन्य गठबंधन ट्रिपल अंतत था।
2. चार वाल्कन राज्य ऑस्टिया और तुर्की के बीच।

4.4

1. जिनेवा
2. राष्ट्रपति वूड्रो विल्सन

4.5

1. जर्मनी और इटली
2. न्यूडील

4.6

1. क) हिरोशिमा
   ख) नागासाकी
2. संयुक्त राष्ट्र के औपचारिक रूप से 24 अक्टूबर 1945 को संयुक्त राज्य अमेरिका में सैन फ्रांसिस्को सम्मेलन में यथावत गठित किया गया था।